Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Reviewed International Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-VI June 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

अमृतलाल नागरकृत "*नाच्यौ बहुत गोपाल*" एक अध्ययन

- डॉ. लीला कर्वा,
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

श्रेष्ठ साहित्यकार अमृतलाल नागरजी का जन्म 17 अगस्त 1916 को गोकुलपुरा, आगरा में एक गुजराती ब्राह्मण परिवार में हुआ । इनके पिता का नाम पं. राजारामजी तथा माता का नाम विद्यावती था । वे केवल इष्टर तक ही पढ सके । 1935 में नागरजी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया । सुनीति, सिनेमा समाचार, चकल्लस नामक पत्रिकाओं का संपादन किया था । 1945 में नागरजी ने नया साहित्य और सन 1953 में मासिक पत्र प्रसाद का संपादन किया । किन्तु नागरजी की रुचि स्वतन्त्र लेखन में अधिक थी ।

नागरजी की रचनायें साहित्य की अनेक विद्याओं में हैं । उपन्यास, कहानी, रिपोतजि, रेखाचित्र, संस्मरण, रुपक, नाटक, रेडियो, नाटक, अनुवाद, बाल साहित्य, यात्रावृत्त, हास्य व्यंग आदि प्राय: गद्य की प्रत्येक विद्या में उन्होंने लिखा है ।

प्रमुख उपन्यास

महाकाल, बूंद और समुद्र, शतरंज के मोहरे, सुहाग के नुपूर, अमृत और विष, सात घूंघटवाला मुखड़ा, एकदा नैमिपारण्यै, मानस का हंस, नाच्यो बहुत गोपाल, खंजन नयन, बिखरे तिनके, अग्निगर्भा, करवट पीढ़ीयाँ ।

बहुविध साहित्यिक प्रतिभा के धनी नागरजी केवल लोकप्रिय उपन्यासकार नहीं थे तो श्रेष्ठ कहानीकार, सफल नाटककार, निबन्ध लेखक, अनुवादक अनेक भाषावेत्ता थे । अमृतालाल नागर एक प्रतिबध्द रचनाकार होने के नाते अपनी रचनाओं में सामाजिक बोध और युग बोध से जुड़े हुए हैं । जीवन जितना विशाल है उतना ही उनके उपन्यास का क्षेत्र भी विस्तृत है । उन्होंने भारतीय समाज की पौराणिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक विषयों पर भी उपन्यास लिखे । वही आधुनिक भारत की सामाजिक समस्याओं का चित्रण भी उनके उपन्यास में हमें मिलता है ।

नाच्यों बहुत गोपाल नागरजी का बहुचर्चित उपन्यास है । यह उपन्यास मेहतर जाती की दयनिय स्थिति, व्यथा, अत्याचार, उपेक्षित जीवन की झाँकी है । सवर्ण सभ्यता के आभिजात्य संस्कारों को उधाड़ कर उसका खोखलापन भी सामने रख दिया ।

निर्गुनिया अर्थात निर्गुण देवी नामक ब्राह्मण युवती इस समुचे उपन्यास का केन्द्र बिंदु है। जो संस्कारी ब्राह्मण नाना नानी के घर अपना बचपन बिताती है । एक वृध्द व्यक्ति के साथ

उसका अनमेल विवाह कर दिया जाता है । किशोर पत्नी की पहरेदारी, तालेबंदी, अनमेलपण नैसर्गिक कामनाओं की होली में निर्गुणियाँ जलने लगती है । इस कारण वह घर के पिछवाड़े के मेहतर जाति के युवा मोहन के साथ भाग जाती है ।

नागरजी ने निर्गुण के ब्राह्मण व संस्कारों को जलाकर मेहतरानी बनने के अन्तर्द्वंद्वों को पूरी ईमानदारी तथा मार्मिकता के साथ प्रस्तुत किया है । निर्गुण के माध्यम से नारी समाज की त्रासदी, पुरुष समाज का अहंकार और मनमानी जैसे खुलकर सामने आ गयी । नारी का शोषण हर वर्ग का हर वर्ण का पुरुष करता है ।

सवर्ण पुरुष भी अपनी कामनाओं की ईच्छापूर्ति के लिए किसी भी वर्ण की स्त्री को भोग्या बना सकता है । जो व्यक्ति जाँतिपाँति का डंका दिन के उजाले में बखुबी पीटता है, वही व्यक्ति नारी को पीड़ा देता है, उसका अपमान करता है। यही पिड़ा, यह दर्द, निर्गुणियाँ के शब्दों में प्रकट होता है । *औरत से बढ़कर कोई भी जादा गुलाम नहीं है । मैंने ब्राह्मण भी देखा, मेहतर भी देखा । मरद सब जगह एक हैं । साँसे सब एक हैं । सब जगह औरत की एक ही एक जैसी ही मिटी पलीत होती है, मैंने दलितों की समसिया को दोहरे डंडा से भोगा है ।*

नागरजी ने निर्गुणिया को उपन्यास में एक ऐसी नारी के रुप में प्रस्तुत किया है जो संस्कारों से ब्राह्मण है लेकिन अपनी विवशता के कारण वह मेहतरानी बनी है । डॉ. सुरेशा बत्रा के शब्दों में *निर्गुण संस्कारों से मेहतरानी बनकर भी अपने पति के एकनिष्ठ प्रेम की पुजारिन है, बल्कि मेहतर मोहन के प्रति उसका लगाव हर परिस्थिति में प्रगाढ़ होता गया ।*

निर्गुण के कई रुप पाठकों के सम्मुख आते हैं । एक वह निर्गुण है जो पतित है, जिसकी नस-नस में कामाग्नि प्रज्वलित हो रही है, वही निर्गुण पूर्ण तौर से मोहनामय हो जाती है । कामवासना से मुक्त होकर विशुध्द प्रेम में लीन हो जाती है । मेहतर की तरह मैला ढ़ोने का कार्य भी करती है, तो अपने दोनों बच्चों को कठोर परिश्रम से पढ़ाती है । आर्य समाज जाना, पाठशाला चलाना ।अंत में स्वच्छ और पवित्र जीवन की कामना करना । इस तरह लेखक ने निर्गुनिया व्यक्तित्व द्वारा नारी एवम दलित मेहतर समाज की त्रासदी का चित्रण किया ।

मेहतर जाति की परम्पराएँ, रीतिरिवाज, रहनसहन, खानपान, मजबूरी नागरजी ने बड़े ही सजीव ढंग से चित्रित की । मेहतरों में हिन्दु मुस्लिम नहीं होते, धार्मिक साम्प्रदायिकता नहीं है । मेहतर जात तो अल्ला की जुठन भी खाता है और राम जी की भी ।

शायद इसीलिए सवर्णों के अत्याचारों और उपेक्षा से पीड़ित होकर अनेक हरिजन क्रिश्चियन बनकर मानसम्मान का जीवन अपना लेते थे ।

नाच्यों बहुत गोपाल में नागरजी ने आर्य समाज का प्रचार एवम महात्मा गांधी के द्वारा अछूतों का उध्दार आंदोलन को भी प्रस्तुत किया है ।

नागरजी ने इस उपन्यास द्वारा स्पष्ट किया है कि कोई भी व्यक्ति जन्म से ही सवर्ण नही होता । कई बार सवर्ण जाति में जन्म लेने के बाद भी वो नीच कर्म करता है, जिसके कारण

विवशता से निर्गुणिया को नीच वर्ण अपनाने में विवश कर देता है । नागरजी ने इस उपन्यास में वर्ग जाति वर्ण में बंटे समाज तथा पुरानी प्रचलित रुढ़ियों का पूर्ण रुप से खंडन करने का प्रयास किया है । छोटी जाति के लोगों के प्रति आग लोगों की जो धारणायें रहती हैं, लेखक ने उन्हें गलत साबित करते हुए, उपन्यास में वे स्वयं लिखते हैं, *एक तो हम समझते हैं कि यह तथाकथित निच जातियाँ नितान्त चरित्रशून्य होती हैं, और दूसरी ओर हमारी धारणा यह बँधती है कि केवल हमारी सहानुभूति तथा दया ही चाहिए।* मैं समझता हूँ यह दोनो बातें गलत हैं । यह हमसे केवल न्याय चाहते हैं । एक स्थान पर मोहन कहता है - हम मेहतर हैं तो क्या हुआ ? अब अछुत उध्दार का जमाना है ।

लेखक ने नाच्यौ बहुत गोपाल में इस शोषण के विरुध्द मानवतावादी दृष्टिकोण अपनाते हुए यह कार्य मानव जाती के लिए कितना लज्जाजनक है, यह स्पष्ट किया है । समाज में क्रान्ति लानेवाली यह रचना सभी दृष्टियों से सफल है ।

नाच्यौ बहुत गोपाल उपन्यास की भाषा शैली जीवंत है । निहायत बोलचाल की भाषा इस उपन्यास में पाठकों को उस परिस्थिति में सहज रुप में प्रवेश कराता है । निर्गुणियों के जीवन में आये अनेक मोड़ को यह शिर्षक नाच्यौ बहुत गोपाल सार्थकता दर्शाता है ।

संदर्भ ग्रंथसुची

नाच्यौ बहुत गोपाल -अमृतलाल नागर

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www.aiirjournal.com